

# 15 आउटडोर शिक्षा : एक नए सैद्धान्तिक संरचनात्मक ढाँचे की खोज–पड़ताल

निधि तिवारी

किशोरों का एक दल हवाओं और ठिठुरा देने वाले मौसम से जूझते हुए एक खड़ी चट्टान पर रेंगता हुआ ऊपर चढ़ रहा था। ऊँचे हिमालय के पिछवाड़े एक सँकरी चट्टानी दरार के आर–पार हवाएँ साँय–साँय करते हुए गुजर रही थीं। उस खड़ी चट्टान पर टिके–टिके वे एक–दूसरे को दुफन्दी गाँठ लगाते हुए रस्सी से खुद की सुरक्षा का इन्तजाम कर रहे थे, जज्बात अपने उफान पर थे, उत्तेजना भी अपने शबाब पर थी। तभी एक पर्वतारोही जोर से चिल्लाया, "टेंशन!", यानी "मुझे कसके पकड़े रहो, वर्ना मैं गिर सकता हूँ!" और सब–के–सब उसकी मदद को जुट गए। होंठ भिंच गए, शरीर सुन्न पड़ गए और चेहरे सुर्ख हो चले। अगले पाँच मिनट सन्नाटे में बीते। इसी दौरान कगार पर लटका वह संकटग्रस्त पर्वतारोही अपने पूरे जीवट के बूते कगार के ऊपर जा पहुँचा। उसकी इस कोशिश के पूरा होते ही पूरी टीम खुशी से सराबोर हो गई। सबके चेहरों से राहत और उल्लास छलके जा रहे थे। अन्दर का तूफान अब थम चला था। उनका सहपाठी सुरक्षित था और वे अपनी 'संयुक्त' विजय मना रहे थे। अपने पीछे खड़ी एक लड़की को मैंने उसकी दोस्त से यह कहते हुए सुना, "कितना अजीब है न – शशांक को कगार के ऊपर चढ़ते देख मैंने राहत महसूस की। इस ट्रिप के पहले मैं उसे अपने आसपास बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। लेकिन आज, उसे सुरक्षित देख मुझे बहुत अच्छा लगा।"

उसकी इस बात से सहसा मुझे कर्ट हाह्न की बात याद हो आई, "संकट में पड़े अपने किसी साथी की मदद करने का अनुभव, या ऐसी मदद कर पाने के लिए हासिल यथार्थवादी प्रशिक्षण का अनुभव भी, एक युवा मन के भीतरी शक्ति–सन्तुलन को कुछ इस तरह बदलने लगता है कि संवेदना, प्रधान प्रेरणा बन जाती है।" वाकई कितनी सही थी यह बात!

क्या यह सच्ची शिक्षा नहीं हैः आउटडोर यानी चारदीवारी के बाहर, खुले में शिक्षा?

## क्या है आउटडोर शिक्षा?

लोगों के किसी भी समूह से पूछिए कि आउटडोर शिक्षा क्या है, तो पक्की बात है कि आप को एक–दूसरे से कुछ हद तक अलग–अलग उत्तर मिलेंगे? आपको हैरत होती है कि ऐसा क्यों है? क्योंकि इस पारखी क्षेत्र का डी.एन.ए., उसकी विशिष्टता ही यह है! इसे परिभाषित करने पर सम्भवतः केवल इसी एक मुद्दे पर सहमति बनती है कि आउटडोर शिक्षा का असर व्यक्ति पर तो पड़ता ही है, पर्यावरण के साथ उस व्यक्ति के रिश्ते पर भी पड़ता है। ये परिभाषाएँ चाहे कहीं से भी आएँ, इन सबको मोटे तौर पर दो समूहों में रखा जा सकता है। एक, जिनकी उत्पत्ति व्यक्ति और ज्ञान सम्बन्धी मनोसामाजिक स्रोत से है, और दूसरा, जिनकी उत्पत्ति (आत्म और प्रकृति के सन्दर्भ में) पर्यावरण से है।

मैं आउटडोर एजुकेशन को सीमित परिसर के बाहर घटने वाली व्यवस्थित शिक्षा के तौर पर परिभाषित करती हूँ। यह कभी भी अन्तिम उत्पाद नहीं होती लेकिन अक्सर इरादतन (और बहुत बार छिपे हुए रूप में) प्रकट शारीरिक गतिविधि के भेस में दिया जाने वाला ज्ञान होती है जिसे तयशुदा उद्देश्य को हासिल करने के लिए बहुत ही बारीकी से सुनियोजित किया जाता है। आउटडोर शिक्षा कार्यक्रमों के कुछ सर्वसामान्य सिद्धान्त हैं – आत्मनिर्भरता, संवेदनशीलता, विविधता, नेतृत्व क्षमता, पर्यावरण–प्रबन्धन, सुरक्षा, साहस, हस्त–कौशल और दक्षता–प्राप्ति। अक्सर ये सब उन आउटडोर शिक्षा कार्यक्रमों के इरादतन हासिल किए जाने वाले गुण होते हैं जिन्हें प्रकृति के तत्वों के साथ गहरी और तीव्र मुठभेड़ में तथा अपने साथी खोजियों की संगत में हासिल किया जाता है।

लेकिन भारत में दुर्भाग्य से हम उस स्थिति से आगे नहीं बढ़ पाए हैं जहाँ आउटडोर गतिविधि को बस उत्तेजना बढ़ाने वाली गतिविधि के तौर पर ही प्रयोग किया जाता है। अक्सर 'आउटडोर शिक्षा' से सीमित अर्थ में 'एड्वेंचर स्पोर्टस्' (साहसिक खेल) वाला आशय लिया जाता है। इसके दायरे में उस सबको नहीं लाया जाता जिसे असल में इस माध्यम से हासिल किया जा सकता है। लेकिन बढ़ते हुए अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क और अनुभव, तथा शैक्षिक प्रक्रिया में हो रहे गहरे सोच – विचार के चलते

यह धारणा अब तेजी से बदल रही है। धीरे–धीरे ही सही, तमाम स्कूल विभिन्न आउटडोर–शिक्षण कार्यक्रमों में रुचि लेने लगे हैं और विद्यार्थियों के लिए इनके आँख खोलने वाले फायदों के महत्व को समझने लगे हैं।

पश्चिमी देशों में 25 सालों से भी अधिक समय से आउटडोर शिक्षा कार्यक्रम सार्वजनिक स्कूल पाठ्यचर्या का एक हिस्सा रहता आया है। 1940 के दशक में 'आउटवर्ड बाउण्ड' की स्थापना के साथ शुरू हुआ रूझान 1970 के दशक में 'प्रोजेक्ट एड्वेंचर' के आने से वहाँ रम गया। आज संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड में आउटडोर शिक्षण कार्यक्रम (जो आम तौर पर जोखिम आधारित होते हैं) वहाँ के माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूल पाठयचर्या का एक अभिन्न हिस्सा हैं। यही नहीं, इन देशों ने अनुसंधान के काम और आउटडोर कार्यक्रमों से होने वाले (या न होने वाले) फायदों से जुड़ी जमीनी स्तर की धारणाओं से सिद्धान्त बनाने के काम में भी भारी निवेश किया है।

## आउटडोर शिक्षा – सिद्धान्त और व्यवहार

आउटडोर शिक्षा से सम्बद्ध अधिकतर दर्शन का मूल यूनानी सोच में देखा जा सकता है; वे शायद ऐसी पहली सभ्यता के लोग थे जिन्होंने 'चरित्र' विकास की दृष्टि से अपने नागरिकों का परिचय जोखिमपूर्ण आउटडोर



गतिविधियों के आधुनिक स्वरूपों से करवाया। यह एक कौतूहल का विषय है कि सिकन्दर महान के विश्वविजय अभियान में उनके विद्वान भी उनके साथ यात्रा पर थे। इसका कारण तो और भी अधिक दिलचस्प है; कहा जाता है कि सिकन्दर अपनी फौज के लोगों को जोखिम भरी लम्बी यात्राओं पर ले जाकर उनका चरित्र–निर्माण करना चाहते थे, और उनके साथ चल रहे ये विद्वान इस प्रक्रिया का मार्गदर्शन करते थे।

जॉन म्यूर और हेनरी डेविड थरो जैसे प्रकृतिवादी दार्शनिकों ने खासकर उत्तरी अमेरिका में आउटडोर शिक्षा के लिए आवश्यक बुनियादें डालीं। लेकिन शिक्षा को खुले परिवेश में एक खोज–यात्रा के तौर पर स्थापित करने का श्रेय, मनोवैज्ञानिक चिन्तक विलियम जेम्स और शिक्षाविद् जॉन ड्युई को जाता है। ड्युई का विश्वास था कि अनुभवजन्य शिक्षा ज्ञानार्जन की किसी भी प्रक्रिया का आधार बनती है। इन सब विचारों को आगे ले जाने वाले व्यक्ति एक प्रेरणाप्रद जर्मन हाईस्कूल टीचर कर्ट हाह्न थे। वे 'समुद्र द्वारा, समुद्र के माध्यम से, समुद्र के लिए प्रशिक्षण' की बात करने वाले पहले व्यक्ति थे। समय बीतने के साथ वे आउटडोर शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ा योगदान करने वाले सिद्ध हुए। उन्होंने उसे युद्ध का नैतिक समतुल्य मानते हुए 'आउटवर्ड बाउण्ड' की स्थापना की। समालोचनात्मक शिक्षाशास्त्र को प्रचारित करते हुए उनका कहना था कि शिक्षा का काम युवाओं को वह सब कर पाने योग्य बनाने का है, जिसे वे सही समझते हैं – तमाम कठिनाइयों, खतरों, मन के सन्देहों, बोरियत और दुनिया भर के तानों के बावजूद।

आउटडोर शिक्षा के माध्यम को शिक्षकों द्वारा अलग–अलग तरीकों और बदलावों के साथ इस्तेमाल किया गया है। और यह खोज तथा अनुसन्धान के मनोसामाजिक सिद्धान्तों पर आधारित है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए, व्यक्तित्व और ज्ञानर्जन से जुड़े अनेकानेक सिद्धान्त आउटडोर शिक्षा के कार्यक्रमों की अलग–अलग व्याख्या करने की ओर आकृष्ट होते हैं। इसके लिए मोटेतौर पर निम्नलिखित से प्रेरणा मिलती है –

1. पर्यावरण सिद्धान्त : इसके तहत प्रकृति की अच्छाई में सहज–स्वाभाविक विश्वास होता है, और इस बात में भी कि प्राकृतिक पर्यावरण से हम प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष तौर पर कुछ न कुछ सीख सकते हैं; और यह तथ्य, कि शुरुआत में तो मनुष्य भी पशु ही थे – इसी के मद्देनजर खुले वातावरण में कुछ भी होता है तो एक तरह की 'घर वापसी' का बड़ा अहसास जगता है। इसके अलावा, प्रकृति से हमें स्वयं के बारे में सीधी–स्पष्ट प्रतिक्रिया मिलती है, जिससे हमें सुरक्षात्मक तौर–तरीकों पर निर्भर रहने के बजाए स्थितियों से जूझने, उन्हें झेल पाने में मदद मिलती है।
2. अनुभवात्मक सिद्धान्त : जॉन ड्युई की 'थ्योरी ऑफ एक्सपीरिअंस' से काफी हद तक अनुप्राणित आउटडोर

शिक्षा विद्यार्थियों को मार्गदर्शित शैक्षिक अनुभव प्रदान करती है। जॉन ड्युई इसे शिक्षा का प्रधान कार्य मानते थे। ड्युई की भाषा में 'स्पाइरल्स ऑफ लर्निंग' (ज्ञानार्जन की कुण्डलियाँ) – यानी योजना बनाना/मोल–तोल के लिए बातचीत– अनुभव करना–समीक्षा करना– सीखे गए को हस्तान्तरित करना – प्राकृतिक भ्रमण आदि के लिए बहुत प्रासंगिक हैं। यह एक अनवरत प्रक्रिया है और अक्सर आउटडोर शैक्षिक कार्यक्रमों की धुरी होती है।

3. मनो–सामाजिक सिद्धान्त : कर्ट हाह्न ने शरीर के माध्यम से मन के प्रशिक्षण का विचार प्रचारित किया। 'आउटवर्ड बाउण्ड' प्रक्रिया उनके लिए एक दोधारी तलवार की तरह हैः पहले घाव और फिर एक तगड़ा स्वास्थ्य लाभ। प्रशिक्षण के 'डंक एण्ड ड्राइ' (भिगोओ और सुखाओ) मॉडल के तौर पर भी जाने जाते आउटडोर शिक्षा कार्यक्रम अक्सर विद्यार्थियों का सामना संकट और विपत्ति से करवाते हैं जिसके चलते उन्हें इन स्थितियों से जूझने की रणनीतियाँ विकसित करनी पड़ती हैं। 'द थ्योरी ऑफ ऑप्टिमल अरॉउजल' यानी अधिकतम जागृति का सिद्धान्त (डफी, 1957), 'थ्योरी ऑफ कॉम्पिटेंस–इफेक्टेंस' (सक्षमता की प्रभावशीलता का सिद्धान्त–व्हाइट, 1959), बॉण्ड्युरा की 'थ्योरी ऑफ सेल्फ एफिकेसी (1986) (बॉण्ड्युरा का प्रभावोत्पादकता का सिद्धान्त), और मॅस्लो के 'हाएरार्की ऑफ नीड्स' (मॅस्लो का श्रेणीबद्ध आवश्यकता सिद्धान्त) के चलते दुनिया भर में आउटडोर शिक्षा कार्यक्रमों की एक साख बनी है।

4. बहुतत्वी : कई आउटडोर समूहों (जैसे कि 'द आउटडोर स्कूल') ने अपने खुद के पाठ्यक्रम बनाए हैं। इनका आधार अक्सर अनुभव–आधारित शिक्षा का सर्पिल/कुण्डली वाला सिद्धान्त होता है और यह मान लिया जाता है कि ज्ञानार्जन एकरेखीय न होकर बहु–स्तरीय होता है। और इनके कार्यक्रमों में शिक्षा के बहुत से क्षेत्रों को एकीकृत किया जाता है, जैसे कि मनःप्रेरक (साइको–मोटर), संज्ञानात्मक और इन्सानी रिश्ते।

## आउटडोर शिक्षा और अकादमिक पाठ्यचर्या–दोनों का मिलन, कहाँ?

संयुक्त राज्य अमेरिका, न्यूज़ीलैण्ड और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में आउटडोर शिक्षा को विज्ञान, सामाजिक–विज्ञान, गणित, पर्यावरण–शिक्षा, शारीरिक और स्वास्थ्य–शिक्षा की पाठ्यचर्या में एक प्रमुख घटक के तौर पर एकीकृत किया गया है। न्यूज़ीलैण्ड में स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा के पाठ्यचर्या कथन के अनुसार, "स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा से ज्ञानार्जन के माध्यम से विद्यार्थी समझदार, जागरूक निर्णय कर सकने की योग्यता के लिए जरूरी ज्ञान, कौशल, प्रवृत्तियाँ और उत्साह विकसित करेंगे। इसी प्रक्रिया में वे यह भी सीखेंगे कि स्वयं अपने, अन्य लोगों के और सम्पूर्ण समाज के कल्याण के लिए क्या कुछ करके योगदान दिया जा सकता है" (शिक्षा मन्त्रालय, 1999, पृ.11)। इसी प्रकार संयुक्त राज्य अमेरिका में 1971 में 'प्रोजेक्ट एड्वेंचर' नाम का एक क्रान्तिकारी कार्यक्रम शुरू हुआ जिसके चलते वहाँ के पब्लिक स्कूलों में शारीरिक शिक्षा की पाठयचर्या का कायाकल्प हुआ। 'प्रोजेक्ट एड्वेंचर' अब घर–घर में लोकप्रिय हो चुका है और करीब 1000 से भी ज्यादा स्कूलों ने कक्षा 1 से लेकर कक्षा 12 तक के लिए उनकी साहसिक शिक्षा पाठयचर्या (एड्वेंचर एजुकेशन करिकुलम) को अपनाया है। पिछले 15 सालों में छपे अनुसन्धान–आधारित प्रमाण बिना किसी शक के दर्शाते हैं कि स्कूली माहौल पर प्रोजेक्ट एड्वेंचर कार्यक्रमों का



कक्षा, व्यापक समुदाय और अपने पड़ोस में ज्ञान लाने सम्बन्धी प्रयासों में भी विद्यार्थियों को इससे काफी मदद मिली है, जिसके चलते वे विभिन्न जीवन–कौशलों से लैस हुए हैं। शारीरिक शिक्षा के एक प्रारूप के तौर पर शुरू हुई परियोजना को आज व्यवहार–प्रबन्धन, विविधता को गले लगाने, और अन्तर–विषयक ज्ञानार्जन के लिए अपनाया जा रहा है।

उदाहरण के लिए, आइए रॉक–क्लाइम्बिंग के अनुभव को जरा टटोलें और देखें कि किस तरह इसका असर पाठ्यचर्या के कई क्षेत्रों पर पड़ता है।

- **भूविज्ञान और भूगोल** – आरोहियों के लिए अक्सर चट्टानों की संरचना और मजबूती के बारे में जानना–समझना जरूरी होता है।
- **गणित और भौतिक विज्ञान** – आरोही इस्तेमाल हो रहे उपकरणों की मजबूती पर निर्भर रहते हैं। रस्सियों और अन्य खूँटीदार यन्त्रों के इस्तेमाल में उनकी मजबूती का बड़ा योगदान रहता है। दरअसल, इनमें से प्रत्येक की मजबूती, दुफन्दी गाँठ की वास्तविक प्रक्रिया और उपकरणों की टूट–फूट में विज्ञान की समझ की बड़ी भूमिका है।
- **इन्सानी रिश्ते** – चट्टान–आरोही और दुफन्दी गाँठ लगाने वाले व्यक्ति के बीच के समीकरण के चलते परस्पर–विश्वास का मानवीय पक्ष उभरकर आता है। इससे मानव सम्बन्धों की प्रकृति और उनकी मजबूती का महत्व हमें समझ में आता है। यही नहीं, इसका सम्बन्ध सम्पूर्ण व्यवस्था (चट्टानें, दुफन्दी गाँठ और उसे लगाने वाला, रस्सी आदि) से सम्बद्ध कौशल और उसकी समझ से भी है, जिसका असर आरोही के मन पर भी पड़ता है।



इस प्रकार आउटडोर शिक्षा कार्यक्रमों के दौरान विद्यार्थी चट्टानों की संरचना और मजबूती (जिसको ध्यान में रखते हुए ही वे चट्टान को पकड़ना और उसका इस्तेमाल करना सीखेंगे), काम में आने वाले विभिन्न उपकरणों, औजारों और यंत्रों, साज–सामान में गाँठ आदि लगाने, दुफन्दी गाँठ आदि के बारे काफी कुछ सीख सकते हैं, और अन्ततः इतनी निपुणता हासिल कर सकते हैं कि चढ़ाई के समय वे एक–दूसरे को दुफन्दे में बाँध सकते हैं। हमें अपने एड्वेंचर आधारित आउटडोर कार्यक्रमों के माध्यम से इसी प्रकार के अन्तर–विषयक ज्ञानार्जन को हासिल करने का लक्ष्य बनाना चाहिए।

## आउटडोर शिक्षा – भारतीय सन्दर्भ

दुर्भाग्य से भारत में अधिकांश स्कूल, खेलों या शारीरिक शिक्षा को प्रतिस्पर्धात्मक खेलों और सामूहिक खेलों के सीमित अर्थों में ही देखते हैं। एड्वेंचर खेलों के साथ प्रयोग करने वाले स्कूलों की संख्या बहुत ही कम है और उससे भी कम संख्या उन स्कूलों की है जिन्होंने एड्वेंचर–खेल आधारित शिक्षा या जमीनी स्तर पर प्रयोग होने वाले पर्यावरण–आधारित कार्यक्रम–प्रारूपों को समझने या उनके साथ प्रयोग करने का प्रयास किया है। इसके कई कारण गिनाए जा सकते हैं। एक प्रमुख कारण है स्कूलों में शारीरिक शिक्षा कार्यक्रमों की हालत। अधिकांश स्कूल इनका इस्तेमाल या तो प्रतिस्पर्धात्मक खेलों के कोचिंग सेण्टरों के तौर पर करते हैं या फिर अतिरिक्त शैक्षिक कार्य के लिए खाली पीरियड के तौर पर। शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम को जतन से तैयार किए जाने की आवश्यकता पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया जाता। एड्वेंचर आधारित कार्यक्रमों को शारीरिक–शिक्षा के पाठयक्रमों में शामिल करना लाभकारी पाया गया है। स्पोर्ट क्लाइम्बिंग, रॉक क्लाइम्बिंग, ट्रेकिंग और कैम्प क्राफ्ट, कॅनोइंग (डोंगी चालन), काइऐकिंग (एक और प्रकार का नाव चालन) और राफ्टिंग जैसे पानी–खेलों, ओरिएन्टियरिंग (नक्शे और कम्पास की मदद से पथ प्रदर्शन), साइक्लिंग, रस्सियों से जुड़े करतब जैसी विशिष्ट गतिविधियों को शारीरिक–शिक्षा पाठ्यचर्या का हिस्सा बनाया जा सकता है। दरअसल, इण्टरनेशनल बॅकालॉरिएट पाठयक्रम अपने विद्यार्थियों के लिए आउटडोर और एड्वेंचर गतिविधियों को शारीरिक शिक्षा के डिप्लोमा पाठयक्रम (डिप्लोमा इन फिजिकल एजुकेशन) के एक हिस्से के तौर पर विशिष्ट दर्जा देता है।

विद्यार्थियों के वयस्कों के तौर पर विकास के दौरान



जीवन–कौशलों की महत्वपूर्ण आवश्यकता रहती है। इस बात को ध्यान में रखें तो आश्चर्यजनक लगता है कि हमारी शिक्षा प्रणाली द्वारा यह मान लिया गया है कि ये कौशल तो कैसे भी सीखे जा सकते हैं। इससे भी बदतर यह, कि सी.बी.एस.ई. द्वारा अब जीवन–कौशलों को अनिवार्य और आकलन–आधारित बनाने के बाद से स्कूलों में जीवन–कौशल के अध्यापकों को नियुक्त करने की एक होड़–सी लग गई है। इन अध्यापकों से आशा की जाती है कि वे जीवन–कौशल सिखाने की कक्षाएँ लें। इस सन्दर्भ में मैं यह कहना चाहूँगी कि समस्या–समाधान, सम्प्रेषण, लक्ष्य–निर्धारण, संवेदनशीलता और निर्णय–क्षमता जैसे जीवन–कौशल वास्तविक अनुभवों के जरिए ही सीखे जाने चाहिए। इसके लिए विद्यार्थियों को एक ऐसा सक्रिय और जीवन्त माध्यम उपलब्ध करवाना होगा जिससे वे प्रयोग कर सकें, गलतियाँ कर सकें और उनसे सीखते हुए इन तमाम जीवन–कौशलों का महत्व जान सकें, समझ सकें – वर्ना तो वे भी रट्टे लगाकर याद करने वाले उन सब पाठों की तरह हो जाएँगे जिन्हें बाद में भुला दिया जाता है। और यहीं पर आउटडोर या एड्वेंचर–आधारित शैक्षिक पाठयक्रम को बड़े आराम से वृहत्तर पाठयक्रम में एकीकृत किया जा सकता है।

इसी प्रकार, अभियानोन्मुखी भ्रमणकारी शिक्षा उन विद्यार्थियों के लिए बड़ा महत्व रखती है जो अभी हाल ही में वयस्क बने हैं और अपने पेशेवर जीवन की राह चुन रहे हैं। एक उल्लेखनीय उदाहरण के.एफ.आई. (कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन ऑफ इण्डिया) स्कूलों का है, जो पिछले बीस बरसों से अपने वयस्क विद्यार्थियों को हिमालय अभियानों पर ले जाते रहे हैं। ऐसे अभियानों का सम्भवतः सबसे अहम मूल्य है अपने अन्तर की, स्वयं अपने भीतर की यात्रा – जिसके दौरान विपत्तियों/प्रतिकूल परिस्थितियों के बरक्स विद्यार्थियों में लचीलापन, साहस, नेतृत्व, आत्म–निर्भरता, हालात के मुताबिक ढलने और सहनशीलता जैसे गुणों का विकास होता है।

पहाड़ पर बेअन्त–सा लगता रास्ता, कन्धों को अपने होने का अहसास जतलाता हुआ पीठ पर लदा बैग, नथुनों से टपकता पसीना और साथ के लिए केवल प्रकृति। ऐसी यात्रा में जिन्दगी के प्रति आपका नजरिया बहुत ही व्यक्तिगत ढंग से परिभाषित होता है – और उसे आप स्वयं ही परिभाषित करते हैं। लगभग तुरन्त ही आप जान जाते हैं कि आपकी सहनशीलता की आखिरी हद क्या है; अत्यन्त प्रतिकूल हालात में रहने वाले गडरियों के प्रति आप में भावना पैदा होती है (यानी समानुभूति); अभियान के दौरान आप सामूहिक कामों में भागीदारी करते हैं; इन्तजार करते हैं तूफान के गुजर जाने का (धीरज); करते हैं भरोसा कल के अच्छे मौसम का (आशावाद), और भिगो लेते हैं खुद को कुदरत की हर ओर फैली गजब की खूबसूरती में। यह सब करते हुए विद्यार्थी पर्वतों से वयस्क के तौर पर उनके काम आने वाले आत्मसुरक्षा के कौशल ही तो सीख रहे हैं!

स्कूलों को इस बाबत उत्साहित किया ही जाना चाहिए

कि वे बड़ी कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए इस प्रकार के भ्रमण–अभियान आयोजित करें ताकि उन्हें इन तमाम भावनाओं से होकर गुजरने का अनुभव हो सके और वे इसके अलावा और भी बहुत कुछ सीखें। ये अभियान ऐसे ऐसे तरीकों से हमारा चरित्र गढ़ते हैं जिनकी हम कल्पना तक नहीं कर सकते।

इसके अलावा, पी.टी. पीरियड के एक हिस्से के तौर पर, हमारे स्कूल कई ऐसी चुनौतियाँ और पहलकदमियाँ जोड़ सकते हैं जिनके लिए विशेष उपकरणों की जरूरत नहीं होती – सिवाय बस एक कुशल अध्यापक के, जो अपने कौशल से विद्यार्थियों के ज्ञानार्जन को सुगम बना सकता है। इन दिनों कुछ स्कूल अपने परिसर में खेलों के लिए दीवार और रस्सी–अभ्यास के लिए मैदान बनाने का विचार कर रहे हैं। ये सही दिशा में उठाए गए कदम हैं, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि प्रकृति और बियाबानों से हमारी आमने–सामने की मुलाकात किसी भी आउटडोर शिक्षण–कार्यक्रम के केन्द्र में रहती आई है। बहरहाल, हमें हमेशा अपने विद्यार्थियों को स्कूल से बाहर भी आउटडोर कार्यक्रमों में शरीक होने के लिए उकसाते रहना चाहिए।

## संशय के साये और उनसे परे

जब भी मैं स्कूलों या कॉलेजों के प्रमुखों से मिलती हूँ और आउटडोर शिक्षा की बात करती हूँ, कमोबेश हमेशा ही उनमें मुझे डर की एक अर्न्तधारा का अहसास होता है, कि बाकी सब तो ठीक, पर ये प्रोग्राम हैं कितने सुरक्षित! कई बार, आउटडोर शिक्षक होने के नाते हमें कह दिया जाता है कि नहीं, यह सब बहुत जोखिम भरा है, और ऐसी गतिविधियों में शामिल होने को लेकर स्कूल शंकालु हो जाते हैं। यह सही है कि बाहर यात्रा के अपने खतरे हैं, लेकिन इनमें से अधिकांश को पूर्व प्रशिक्षण, अक्लमन्द नेतृत्व और प्रमाणित उपकरणों के इस्तेमाल के जरिए काबू में रखा जा सकता है। यहाँ मेरी दलील दो–स्तरीय होगी।

एक, क्या हम यह नहीं मानते कि हमारे विद्यार्थियों के लिए जोखिम–प्रबन्धन का सबक एक प्रमुख सबक है? दार्शनिक स्तर पर – या असल में, अक्षरश भी – हमारा जीवन क्या जोखिमों भरा नहीं है? यदि हम अध्यापक और स्कूल–प्रबन्धन समेत अपनी तमाम स्कूली व्यवस्था को इतना जोखिम–विमुख बना देंगे तो फिर भला हम अपने विद्यार्थियों से यह उम्मीद कैसे रख सकते हैं कि वे वयस्कों की तरह अपना जीवन–मार्ग बनाएँगे, सही निर्णय लेंगे और अपने जोखिमों का प्रबन्धन ठीक–ठाक रखेंगे। खतरों से दूर भागने की बजाय क्या हमें अपने विद्यार्थियों को यह नहीं सिखाना चाहिए कि वे जोखिमों की पहचान और उनका विश्लेषण कैसे करें। इसके आधार पर जोखिम–प्रबन्धन की अपनी रणनीतियाँ कैसे बनाएँ? जोखिम–प्रबन्धन का शिक्षण आउटडोर शिक्षण कार्यक्रमों में प्रमुख विषय होना चाहिए क्योंकि यह एक ऐसा जीवन–कौशल है जिससे विद्यार्थियों का परिचय होना ही चाहिए। जोखिम–प्रबन्धन जैसा जीवन–कौशल बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस बात को ध्यान में रखते हुए स्कूलों के लिए क्या यह महत्वपूर्ण नहीं होगा कि वे जोखिम–विमुख न बनें, बल्कि एक केन्द्रीय अवधारणा के तौर पर जोखिम–प्रबन्धन को अच्छे से खंगालें? और इसे सिखाने के लिए बाहर, खुले आसमान से अधिक बेहतर और 'असली' माध्यम और क्या हो सकता है?

इसके अलावा, यह मानते हुए कि स्कूलों के पास अपने विद्यार्थियों को आउटडोर–शिक्षा अभियानों पर ले जाने की क्षमता नहीं है और अक्सर यह काम बाहरी एजेंसियों को देने के अलावा उनके पास कोई और चारा नहीं होता। स्कूलों को सम्बन्धित आउटडोर कम्पनी/संस्थापक के परिचय–पत्र वगैरह की पुष्टि, इस्तेमाल होने वाले साज–सामान के प्रमाण पत्रों की, और स्टाफ द्वारा प्राप्त कौशल–आधारित तथा प्रथमोपचार सम्बन्धी प्रशिक्षण के स्तर की जाँच, और आउटडोर शिक्षा को लेकर उनकी सोच की गहराई को ठोक–पीटकर परखने के माध्यम से बाहर की यात्रा के जोखिम पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। अगर ये सब नहीं किया जाता तो स्कूल केवल बेमतलब की, बहुत ही हल्की–फुलकी, मस्ती की गतिविधियाँ करके रह जाएँगे जिनमें ज्ञानार्जन की कोई संरचनात्मक पैठ नहीं बन पाएगी।

## सीखकर आगे बढ़ना

आउटडोर भ्रमणों के तमाम फायदों के मद्देनजर स्कूलों को अनुभवजन्य शिक्षाप्रद मॉड्यूल/शिक्षाक्रम तैयार करने और उन्हें अपनी पाठ्यचर्या में एकीकृत करने का काम करना चाहिए ताकि शिक्षा का स्वरूप व्यावहारिक बने। यह स्कूल प्रबन्धन पर निर्भर करता है कि आसानी से उपलब्ध इस माध्यम का अधिकतम लाभ वह कैसे उठाए।

शिक्षा को ज्यादा मजेदार और परस्पर आदान–प्रदान वाला, वास्तविक और प्रासंगिक बनाने की दृष्टि से आउटडोर शिक्षा हमें ऐसे बहुत मौके देती है जिनके चलते हम न केवल अपने आसपास की दुनिया (पर्यावरण, प्रकृति, लोगों इत्यादि) की पड़ताल कर सकते हैं बल्कि यह भी खंगाल सकते हैं कि हममें कुछ करने का कितना माद्दा है। कर्ट हाह्न को हमेशा ही यह भरोसा रहा कि हममें कुछ करने का उससे कहीं अधिक माद्दा होता है जितने के काबिल हम स्वयं को समझते हैं। क्या शिक्षा इसी सम्भावना को टटोलने का नाम नहीं है? यदि आप इस बात से सहमत हैं तो देखिए, कर्ट हाह्न नामक यह विनम्र आउटडोर शिक्षक शिक्षा का क्या सार हमारे सामने रखता है – "शिक्षा का प्रमुख काम मैं इन गुणों का संरक्षण सुनिश्चित करना मानता हूँ – एक उद्यमशील कौतूहल, कभी न थकने वाला जोश और भावना, लक्ष्य–प्राप्ति के लिए टिके रहने की क्षमता, तर्कसंगत आत्म–वंचना के लिए तैयार रहना, और इन सबसे ऊपर, संवेदना और सहानुभूति।"

**टिप्पणी :**

1. दुफन्दी गाँठ लगाना : आरोहण के दौरान ऊपर चढ़ने के लिए इस्तेमाल होने वाली रस्सी पर घर्षण के लिए प्रयोग की जाने वाली एक तकनीक, ताकि नीचे की ओर फिसलता हुआ आरोही फिसलते–फिसलते बहुत दूर न चला जाए – कुल मिलाकर यह रस्सी द्वारा सुरक्षा की एक व्यवस्था है।
2. आउटवर्ड बाउण्ड : 1930 के दशक में कर्ट हाह्न द्वारा प्रस्तावित एक रचनात्मक, नवाचारी शैक्षिक विचार – अपना सुरक्षित समुद्र तट छोड़ खुले अथाह समुद्र में जाने वाले उस जहाज का प्रतीक, जो विश्वयुद्ध के दौरान अपने घरों का आराम तज लड़ाई के मैदान की ओर चल पड़े युवाओं का रूपक था। और अब, साठ बरस से भी ज्यादा अर्से के बाद, छह महाद्वीपों के 40 से भी अधिक देशों में स्कूल और कार्यक्रमों की लम्बी–चौड़ी फेहरिस्त के चलते 'आउटवर्ड बाउण्ड' को दुनिया की सबसे पुरानी आउटडोर शैक्षणिक संस्था कहा जा सकता है।
   'द आउटडोर स्कूल' एक ऐसा आउटडोर शिक्षण स्कूल है जिसका मानना है कि शिक्षा का काम उन अनुभवों का सृजन करना और उनके सम्पर्क में रहना है जो जोश और चुनौतियाँ भरे हैं, विकासोन्मुखी और रूपान्तरकारी हैं। बंगलौर स्थित यह संस्था अनुभवजन्य शिक्षा को स्कूली पाठ्यचर्या में सहज रूप से एकीकृत करने के काम में लगी है।

**सन्दर्भ :**


- http://www.pa.org/?page_id=996
- http://www.childrenandnature.org/downloads/outdoorschool_finalreport.pdf
- http://www.cbse.nic.in/cce/life_skills_cce.pdf
- Research paper on "The nature and scope of outdoor education in New Zealand schools", by Dr Robyn Zink, Monash University, Dr Michael Boyes, University of Otago
- www.kurthahn.org
- http://wilderdom.com/research.php
- "Adventure Education & Outward Bound: Out-of-class experiences that make a lasting difference", by John Hattie & H.W. Marsh
- "Meta-Analytic Research on the Outcomes of Outdoor Education", by James T. Neill, University of New Hampshire
- "Interdisciplinary Teaching through Outdoor Education", a book by Camille J Bunting



***निधि तिवारी** एक आउटडोर शिक्षक हैं। वे पिछले एक दशक से भी अधिक समय से आउटडोर शिक्षा के पेशे से जुड़ी हैं। वे आउटडोर गतिविधियों के प्रति बहुत उत्साही हैं और उन्होंने नॉर्थ कॅरोलिना आउटवर्ड बाउण्ड स्कूल से 'लीडर' का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। अपना खुद का एक आउटडोर स्कूल शुरू करने का उनका सपना जनवरी 2010 में साकार हुआ जब उन्होंने 'द आउटडोर स्कूल'(www.theoutdoorschool.in) की स्थापना की। अब वे आउटडोर माध्यम का उपयोग करते हुए विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों के लिए शैक्षणिक पाठयक्रम बनाती और उनका नेतृत्व करती हैं। अपने इस आउटडोर प्रेम के अलावा वे पिछले दो सालों से अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन से भी जुड़ी रही हैं। वे खासकर 'लर्निंग कर्व' पर काम करती रही हैं। उनसे nidhitiwariblr@gmail.com पर सम्पर्क साधा जा सकता है।*